Research Paper E-ISSN NO : 2455-295X | VOLUME : 6 | ISSUE : 9 | SEPTEMBER 2020

शिक्षा में नवाचारः एक शिक्षक की भूमिका

सपना [1]
[1] राउमावि चान्दना, तह॰ पदमपुर, जिला– श्रीगंगानगर (राज॰)

ABSTRACT:

नवाचार एक तरह का नया विचार है, व्यवहार है अथवा वस्तु है, अर्थात् यदि शिक्षा को रूचिकर रचनात्मक, उपयोगी व्यवहारिक सरल, क्रियात्मक प्रासंगिक बनाना ही नवाचार है। आधुनिक युग में नवाचार की बहुत ही आवश्यकता है, क्योंकि नवाचार के द्वारा ही छात्रों में बहुमुखी सर्वांगीण विकास के लिए शिक्षा पद्धति में नवाचार जरूरी है। नवाचार के द्वारा ही छात्रों में सकारात्मक विकास के साथ नैतिक मूल्यों आदर्शों का विकास संभव है। नवाचार का विकास तभी संभव है जब शिक्षक नवाचार के द्वारा नवीन शिक्षण विधियों, पढ़ाने में नवीन तरीकों को प्रयोग में लाएं जिससे छात्रों को उन कौशलों से अवगत कराकर उनकी प्रतिभा में निखार ला सकें। शिक्षक शिक्षा में नवाचार के प्रयोग द्वारा परम्परागत शिक्षा पद्धति को वर्तमान परिवेश के अनुकूल बनाया जा सकता हैं।

शिक्षा की धारणाओं, आदर्शो, मूल्यों मान्यताओं योजनाओं तथा व्यवस्था में होने वाला परिवर्तन ही शिक्षा के क्षेत्र में नवाचार के नाम से जाना जाता है'' चूँकि शिक्षा सामाजिक परिवर्तन का सबसे सशक्त माध्यम होने के साथ–साथ देश समाज के आर्थिक विकास का महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए राष्ट्र के निर्माण में छात्र आधारभूत तत्व है वे परिवार समाज देश के लिए एक महत्वपूर्ण अंग है। इसलिए शिक्षक का कृत्वय बन जाता है कि छात्रों को इस प्रकार कि शिक्षा प्रदान करें जिससे वे आत्मनिर्भर बन सकें तथा समाज की आवश्यकताओं को पूरा कर सकें।

KEYWORDS:

प्रस्तावनाः–

''नवाचार शब्द, नव + आचार शब्दों से मिलकर बना है। जहॉ नव शब्द का अर्थ नया अथवा नवीनता से है, तथा आचार शब्द अर्थ परिवर्तन से है। इस प्रकार नवाचार वह परिवर्तन है, जो पूर्व की प्रचलित विधियों वस्तुओं आदि में नवीनता का संचार करना। परिवर्तन सफल जीवन के लिए आवश्यक होता है। जहॉ परिवर्तन होता है वहॉ नये–नये विचारों का उदय होता है। देश समाज की आवश्यकताओं के परिप्रेक्ष्य में शिक्षा का संपूर्ण स्वरूप का ही परिवर्तन होता जा रहा है।

अध्ययन का उद्देश्य प्रस्तुत शोध को सम्पन्न करने हेतु सम्बन्धित समस्या के संदर्भ में अध्ययन के उद्देश्य निर्धारित किये गये है, जो इस प्रकार है–

1. वर्तमान समय में शिक्षक शिक्षा नवाचार के माध्यम से अधिगम प्रक्रिया को सरल बनाने की तकनीकी प्रदान करना।

2. शिक्षक शिक्षा नवाचार के माध्यम से शिक्षको को नवीन ज्ञान से परिचित कराना।

3. शिक्षक शिक्षा नवाचार के नवाचारों में शैक्षिक प्रयोग की संभावना तलाशना।

4. शिक्षक शिक्षा नवाचार में आने वाली बाधाओं की पहचान कराना।

शैक्षिक नवाचार का अर्थः–नवाचार वह परिवर्तन हैं जो पूर्व–स्थित विधियों पदार्थों आदि में नवीनता का संचार करे। ''अग्रेजी भाषा का प्ददवअंजपवद शब्द Innovated शब्द से बना है जिसका अर्थ चैम्बर्स शब्द–कोष में इस प्रकार हैः–

शैक्षिक नवाचार पर विचार करने से पहले 'नवाचार' शब्द का अर्थ जान लेना आवश्यक है। नवाचार दो शब्दा नव + आचार से मिल कर बना है। नव का अर्थ है नवीन या नया आचार का अर्थ होता है व्यवहार अथवा रहन–सहन। आचार को चलन अथवा प्रचलन भी कहा जा सकता है। इस आधार पर शैक्षिक नवाचार को शिक्षा के नवीन प्रचलित व्यवहारों के रूप में परिभाषित किया जा सकता है। शिक्षा के उक्त प्रचलित व्यवहारों के अन्तर्गत उन सभी नवीन अवधारणाओं, विचारों, विधियों, सिद्धान्तों, प्रयोगों सूचनाओं को सम्मिलित किया जा सकता है जो शिक्षाविदों के आधुनिकतम चिन्तन के परिणामस्वरूप उत्पन्न हुई हैं। इस प्रकार नवाचार शैक्षिक तकनीकी के रूप में शिक्षा दशन, मनोविज्ञान विज्ञान आदि शिक्षा के समस्त पहलुओं को प्रभावित करता है।

INNOVATED-

1. परिवर्तन लाना।
2. नवीनता लाना।

अतः नवाचार का अर्थ हुआ–''वह परिवर्तन जो नवीनता लाये।''

परिभाषाएंः– वर्तमान समय में शिक्षा के क्षेत्र में जो क्रान्ति उत्पन्न हुई है। वह नवाचार शब्द की ही देन है। आज शिक्षण विधियों, शिक्षण प्रविधियों में अनेक प्रकार का नवीनता का समावेश हुआ ह। वह शैक्षिक नवाचार का ही प्रदर्शित करता है। शिक्षा जगत में नवाचार को विद्वानों द्वारा निम्नलिखित रूप से परिभाषित किया गया है–

ई. एम. राजर्स के शब्दों में– ''नवाचार वह विचार है, जिसकी प्रतीति, व्यक्ति नवीन विचारों के रूप में करें।''

एच. जी. वारनेट के शब्दों में–'' नवाचार एक विचार है, व्यवहार है अथवा पदार्थ है जो नवीन है वर्तमान स्वरूप से गुणात्मक दृष्टि से भिन्न है।''

नवाचार की प्रमुख विषेषताएंः–

1. नवाचार का संबंध नवीन तकनीकी नवीन ज्ञान से होता है जिसका प्रयोग शिक्षक द्वारा शिक्षण प्रक्रिया में किया जाता है।
2. शैक्षिक नवाचारों में क्रियाशील प्रायोगिकता की प्रवृति विद्यमान होती है।
3. शैक्षिक नवाचार का संबंध प्रमुख रूप से षिक्षण अधिगम प्रक्रिया को प्रभावी रूचिपूर्ण बनाने से होता है।
4. नवाचार के द्वारा वर्तमान परिस्थितियों में सुधार लाने का प्रयत्न किया जाता है।
5. शैक्षिक नवाचारों द्वारा नवीन शैक्षिक तकनीकी को विद्यालयों तक पहुँचाया जाता है।
6. शैक्षिक नवाचारों में उन नवीन तकनीकी का प्रयोग होता है जो छात्रो के सर्वांगीण विकास का मार्ग प्रशस्त करती है।
7. यह प्रयासपूर्ण किया जाने वाला कार्य है।

शिक्षा नवाचार के विभिन्न क्षेत्रः– शैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत विभिन्न व्यावहारिक गतिविधियों द्वारा गणित की शिक्षा, भाषा की शिक्षा, पर्यावरणीय शिक्षा, विज्ञान, सामाजिक अध्ययन की षिक्षा, जनसंख्या शिक्षा, शैक्षिक दृष्टि से पिछड़े विकलांग बच्चों की शिक्षा, लगिक समानता, अपवंचित वर्ग को शिक्षा नये तरीके से देना शैक्षिक नवाचार के अन्तर्गत आता है। इन बिन्दुओं को प्रारम्भिक कक्षाओं से ही पाठ्यक्रम में जोड़ना चाहिए। पर्यावरण शिक्षा, जनसंख्या षिक्षा, लिंग भेद का निवारण, संवेदीकरण, सामाजिक समानता के अवरोधों की समाप्ति आदि 21वीं शताब्दी की चनौती का सामना करने के लिए आवश्यकता है। इन समस्याओं के प्रति छात्र–छात्राओं को प्रारम्भिक कक्षाओं से ही संवेदनशील बनाना अपेक्षित है जिसके लिए संकल्पना की पद्वतियों को अपनाना है।

शिक्षा का क्षेत्र बहुत व्यापक है, जो जीवन के प्रत्येक क्षेत्र का प्रभावित करता है, वास्तव में शिक्षा बालक का भावी जीवन के लिए तैयार करती है तथा बालक अपना बाल्येतर

जीवनकाल सुख, शांति व सफलतापूर्वक जीकर मानव व राष्ट्र के लिए कुछ कर सके, इस अवधारणा को मजबूत करती है। बालक भविष्य के लिए तैयार होता है इसलिए आवष्यक है कि भविष्य में आने वाली समस्याओं, विधाओं व आवष्यकता का ध्यान रखकर नवाचार का क्षेत्र किया जाए। कुछ प्रमुख क्षेत्र इस पकार चिन्हित किए गए है।

नवाचार के विभिन्न प्रकारः–

शैक्षिक नवाचारों को सामान्यतः क्षेत्र की सीमा में बांधना एक दुष्कर कार्य है। जिस प्रकार शिक्षा की कोई सीमा नहीं होती, उसी प्रकार शैक्षिक नवाचार भी गिनाये नहीं जा सकते। कभी–कभी कोई नवीन चिन्तन अथवा विचार किसी भो प्रकार के शैक्षिक नवाचार को जन्म दे सकता है। किन्तु प्रबन्ध के संदर्भ में यह कहा जा सकता है कि उसे यह देखना आवश्यक होता है कि कोई नवाचार उसके विद्यालय के लिये उपयोगी हो सकता है अथवा नहीं, इस बात को अधिक स्पष्ट करने के लिये एक उदाहरण दिया जा सकता है।

शैक्षिक नवाचार के क्षेत्र में अनेक अनुसंधान होते रहते हैं। यदि ऐसा कोई अनुसंधान उच्च शिक्षा के क्षेत्र से सम्बन्धित हो, तो प्रबन्धक उसे अपने माध्यमिक विद्यालय में प्रचलित नहीं कर सकता। इसी प्रकार भारत सरकार की नयी शिक्षा नीति– 1986 में 10+2+3 शिक्षा शैक्षिक नवाचार संरचना, अल्पसंख्यकों–पिछड़े व वंचितों की शिक्षा, सतत् शिक्षा, शिक्षक प्रशिक्षण, ग्रामीण विद्यालयों के विकास, दूरस्थ शिक्षा व मुक्त विद्यालयों की स्थापना, धर्म निरपेक्षता साक्षरता को लागू करने की बात कही है। इन सब नवाचारों में से उनको लागू करना तो प्रबन्धकों के लिये आवश्यक होता है, जो सरकार द्वारा अनिवार्य घोषित किये जाते हैं, किन्तु ऐच्छिक प्रस्तावों पर उन्हें उनकी उपयोगिता सार्थकता पर विचार करना पड़ता है। इस दृष्टि से विद्यालयों के लिये शैक्षिक नवाचारों के क्षेत्र व भूमिका को निम्न रूप में वर्णित किया जा सकता है–

1. विद्यालय प्रबन्ध में प्रधानाचार्य तथा शिक्षकों की सहभागिता पर विचार करना।

2. अनिवार्य सरकारी नीतियों के अन्तर्गत आने वाले शैक्षिक नवाचारों को लागू करना। इसमें शिक्षा संरचना, पाठ्यक्रम, प्रवेश प्रक्रिया आदि को शामिल किया जा सकता है।

3. सम्मेलनों, सेमिनारों, गोष्ठियो में प्रस्तावित किये गये नवाचारों पर विचार करना।

4. लोकतांत्रिक मूल्यों को स्थापित करने में नवीन तथ्यों का समावेश करना।

5. परीक्षा प्रणाली व्यवस्था में परिवर्तन करना।

6. अभिक्रमित अनुदेशन, शिक्षण मशीन तथा कम्प्यूटर सह अनुदेशन आदि विधियों को लागू करना।

7. नये–नये व्यावसायिक पाठ्यक्रमों को लागू करना।

8. शैक्षिक तकनीकी में होने वाले परिवर्तनों को विद्यालय में प्रचलित करना।

9. सूक्ष्म शिक्षण की व्यवस्था करना।

10. कठोर कोमल सामग्री तकनीकी को प्रोत्साहित करना।

11. समाज सेवा, साक्षरता अभियान दूरस्थ शिक्षा का प्रबन्ध करना।

12. सूचना तकनीकी का प्रयोग करना।

13. राष्ट्रीय, अन्तर्राष्ट्रीय सद्भाव वैश्वीकरण से सम्बन्धित सूचनाओं तथा ज्ञान

14. विद्यालय के विकास के लिये नवीन भवनों, विभागों आदि की स्थापना पर विचार करना।

15. अन्तर्राष्ट्रीय शैक्षिक मानकों पर विचार करना।

16. मनोरंजक शैक्षिक कार्यक्रमों का आयोजन करना।

17. सर्व शिक्षा अभियान, प्रौढ़ शिक्षा कार्यक्रम तथा सभी के लिये शिक्षा की योजनायें लागू करना।

18. निर्देशन व परामर्श की नवीन तकनीकों का समावेश करना।

शिक्षा नवाचार शिक्षण अधिगम प्रस्पर संबंधः– शिक्षण कार्य किसी भी देश के विकास तथा उन्नति के लिए तकनीकी आधार है। शिक्षण के माध्यम से छात्रों में अपेक्षित व्यवहारगत परिवर्तन करने के लिए पृष्ठ पोषण के सम्प्रत्यय का ज्ञान प्राप्त कर विविध युक्तियां तथा विधियों का उपयोग किया जाता है। अध्यापक शिक्षा में अन्तः क्रिया विश्लेषण एक मुख्य तत्व है। वस्तुतः अध्यापन कार्य में अन्तः प्रक्रिया तथा उसका विश्लेषण अध्ययन के साथ–साथ चलता है। इसमें शिक्षण का आधार–उदेश्य, स्तर, क्रियाएं, शिक्षण शासन व्यवस्था तथा शिक्षण के स्वरूप के अनुसार होता है।

शिक्षक शिक्षा नवाचार की आवश्यकताः– आज हमारे देश में नवाचार शिक्षा के उत्थान हेतु शैक्षिक मानकों को बढावा देने के साथ–साथ सतत विकास के लिए शिक्षक शिक्षा प्रणाली एक आकर्षक शक्तिशाली माध्यम है। आज शिक्षक शिक्षा के विकास के लिए अनेक ऐसे मुद्दे है, जिनके विकास हेतु शिक्षक शिक्षा कार्यक्रमों में आवश्यक सुधार की आवश्यकता है। आज प्रतिस्पर्धा का युग है ऐसी परिस्थति में शिक्षक शिक्षण, एकीकृत शिक्षण, शिक्षक शिक्षा कार्यक्रम शिक्षण पाठ्यक्रम में नवीन परिवर्तन की आवश्यकता है। यदि शिक्षण शिक्षा को मजबूत बनाना है तो शिक्षको को नवीन ज्ञान, शिक्षण काशलों में दक्षता, नये–नये तकनीकी अनुसंधान का ज्ञान व नवाचार के ज्ञान इनके व्यवहारिक प्रयोग में पारंगत होना अति आवश्यक है। आज की परिस्थितियाँ शिक्षक शिक्षा के लिए बहुत ही कठिन है, इन परिस्थितियों में छात्रों के साथ परस्पर संबंध स्थापित करने के लिए शिक्षकों को नये–नये शैक्षिक तकनीको की जानकारी आवश्यक है। आज देश में शैक्षिक क्षमता में वृद्धि हेतु नयी–नयी तकनीके आ गई है ये तकनीके जैसे इंटरनेट तथा दूरदर्शन पर प्रसारित शैक्षिक प्रोग्राम के माध्यमों का प्रयोग करके बालक नये नये ज्ञान को प्राप्त कर सकता है। इसलिए शिक्षको को चाहिए कि छात्रों को शिक्षा देने में नयी नयी प्रौद्योगिक के साथ अपने आप को हमेशा दक्ष करते रहना होगा। सीखना जीवन पर्यन्त चलने वाली प्रक्रिया होती है

जिससे शिक्षक शिक्षा को अनुपयोगी बनाकर सफलता पायी जा सके इसके लिए शिक्षक को लगातार प्रयास करते रहना चाहिए इसके लिए शिक्षक करके सीखना, अभ्यास करना खोज करना आदि अनुभवों का वर्तमान लगातार प्रयोग किये भी जा रहें है। शिक्षक शिक्षा में नवाचार लाने के उद्देश्य से ही देश में शिक्षक–प्रशिक्षण कार्यक्रम से संबन्धित तरह–तरह के कार्यक्रम ''राष्ट्रीय अध्यापक शिक्षा परिषद् अधिनियम–2014'' के द्वारा कुछ महत्वपूर्ण प्रभावशाली परिवर्तन किये गये है जैसे–स्नातक स्तर पर बी.एड की एक वर्षीय पाठ्यक्रम को बढाकर द्विवर्षीय शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.एड) शारीरिक शिक्षा में स्नातक (बी.पी.एड.) तथा शारीरिक शिक्षा में मास्टर डिग्री (एम.पी.एड.) इसी प्रकार तीन वर्षीय एकीकृत बी.एड.–एम.एड चार वर्षीय एकीकृत बी.ए–बी.एड, बी.एससी–बी.एड. बी.एल.एड पाठय् क्रम आदि।

जब हम शिक्षक शिक्षा में नवाचार को लागू कराते है तो नवाचार का उपयोग करने वाले व्यक्ति को क्या सीखना है, कैसे सीखाना है, कब सीखना हैं, क्यों सीखना हैं के साथ दृसाथ सीखे गये कार्यो के बारे में पता लगाकर उसके मूल्यांकन हेतु नवीन उपकरणों की जानकारी दी जाती है ताकि एक नवाचार का अपनाने वाला शिक्षक शिक्षण संबंधी समस्याओं का समाधान करते है दूसरे शिक्षको को भी समस्या समाधान हेतु प्रेरित करते है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचार का प्रमुख महत्वः–

1. नवाचार के द्वारा शिक्षक छात्रों को अरूचिकर तथा उबाऊ करने वाले शिक्षण से दूरकर रूचिकर शिक्षा देने में सक्षम होते है।

2. नवाचार के द्वारा शिक्षक अपने आप को नये नये ज्ञान की खोज करने के प्रति तैयार करना अध्ययनशील बनाना।

3. नवाचार क माध्यम से विद्यालय समाज समुदाय के मौजूदा संसाधनों का सर्वोत्तम ढंग से उपयोग कर सकता हैं।

4. शिक्षक नवाचार के द्वारा पहले से चली आ रही पुरानी विधियाँ जो कि उवाऊ व अरूचिकर विधियों को दूर करके नवीन दक्षताओं को विकसित कर सकता हैं।

5. नवाचार के द्वारा शिक्षक अपना शैक्षिक उत्थान कर सकता है।

शिक्षक शिक्षा में नवाचारः– शिक्षक शिक्षा में नवाचार की आवश्यकता शिक्षक समाज का महत्वपूर्ण हिस्सा है जो शिक्षा के माध्यम से बदलाव का कारक है। शिक्षक प्रशिक्षण स्कूली शिक्षा दोनो का आपस में गहन संबंध है जो कि यह एक दूसर को प्रभावित करते है। चूँकि प्रभावी शिक्षक प्रशिक्षण विद्यालयी शिक्षा की गुणवत्ता को सुनिश्चित करता है। यह शिक्षक शिक्षा के वृहत्तर संदर्भो में कार्य करता है जैसे शिक्षा के उद्देश्य, शिक्षा का पाठ्यक्रम, आवश्यकता अपेक्षाताओं के साथ जोड़ कर देखा जाना चाहिए। शिक्षक को केवल शिक्षण विधियों का ज्ञान ही नही बल्कि बच्चों को उनके सामाजिक–आर्थिक परिवेश को तथा सीखने की प्रक्रिया को समझाने का प्रयास किया जाना चाहिए।

1. वर्तमान की आवश्यकताओं, अपेक्षाओं आशाओं की पूर्ति के लिए।

2. शिक्षक शिक्षा में गुणवत्तापूर्ण सुधार लाने के लिए।

3. शिक्षक शिक्षा को समय के साथ परिवर्तन युक्त बनाने के लिए।

4. शिक्षण विधियों में रचनात्मकता एवं नवीनता लाने के लिए।

5. छात्राध्यापकों को प्रत्यक्ष स्थायी ज्ञान प्रदान करने योग्य बनाने हेतु।

6. शिक्षक शिक्षा में नवीनतम् प्रौद्योगिकी तकनीकी के ज्ञान का विस्तार करने के लिए।

7. शिक्षक शिक्षा में गुणात्मक मात्रात्मक विकास के लिए।

8. शिक्षक शिक्षा संस्थानों विद्यालय में समन्वय स्थापित करने के लिए।

9. बदलते हुए परिवेश को वर्तमान समय के साथ गतिशील बनाने के लिए।

10. छात्राध्यापकों को क्रियाशील बनाने के लिए।

12. कार्य क नये क्षेत्रों के बारे में जानने तथा समझने के लिए।

शैक्षिक नवाचार की अवधारणाः– परिचय– शैक्षिक नवाचार शिक्षा की विकासोन्मुख रहने वाली प्रक्रिया को प्रदर्शित करने वाली एक नवीन अवधारणा है। नवाचार शब्द का प्रयोग वैज्ञानिक विकास के युग में शैक्षिक तकनीकी के नवीन प्रावधानों के कारण शैक्षिक नवाचार का महत्त्व बढ़ गया है। अन्तर्राष्ट्रीयता, वैश्वीकरण जनसंचार के आधुनिक संसाधनों ने इसे आज के युग की एक आवश्यकता के रूप में स्थापित कर दिया है।"

शैक्षिक नवाचार की भूमिकाः–

1. कल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु– स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत में लोकतान्त्रिक संसदात्मक शासन प्रणाली को अंगीकार किया गया। ऐसी शासन प्रणाली लोक कल्याण के लिए प्रवृत्त होती है। भारत में भी कल्याणकारी राज्य की स्थापना का संकल्प लिया गया है। ऐसी शासन प्रणाली में सबको प्राथमिक शिक्षा, अवसरों की समानता, जीवन को न्यूनतम आवश्यकताओं की पूर्ति आदि का आश्वासन गारण्टी दी जाती है। विभिन्न शिक्षा आयोगों, समितियों विचारकों ने भारत में लोक कल्याणकारी राज्य की स्थापना हेतु शिक्षा प्रणाली में परिवर्तन के लिए समय–समय पर सुझाव दिये हैं। वर्तमान समय में लागू या विचाराधीन नवाचार इसी का परिणाम है।

2. वैज्ञानिक तकनीकी प्रगति के अनुरूप शिक्षा प्रणाली– वर्तमान युग विज्ञान का युग है। सम्पूर्ण विश्व में विज्ञान तकनीकी के क्षेत्र में नित नूतन अनुसन्धान खोजें हो रही हैं। पाताल से लेकर अन्तरिक्ष तक विज्ञान के चमत्कार दृष्टिगोचर हो रहे हैं। घर, कार्यालय, व्यावसायिक प्रतिष्ठान, उद्योग, बैंक, परिवहन, सर्वत्र वैज्ञानिक उपकरणों का प्रचुर प्रयोग हो रहा है। दूरदर्शन, कम्प्यूटर, जीराक्स आदि अनेक उपकरण शिक्षा के क्षेत्र में भी क्रान्ति ला रहे हैं। इन वैज्ञानिक उपकरणों के संचालन, रख–रखाव आगे विकसित करने के लिए शिक्षा मे नवीन विधियों पद्धतियों का समावेश करना आवश्यक है।

3. वर्तमान जनसंख्या की आवश्यकताओं की पूर्ति हेतु– स्वतन्त्रता प्राप्ति के पश्चात् भारत की जनसंख्या में तेजी से वृद्धि हो रही है। स्वतन्त्रता प्राप्ति के समय 33 करोड़ जनसंख्या अब 1.30 अरब से अधिक हो गयी है। इस विशाल जनसंख्या की आवश्यकताएँ भी विशाल हैं। इन्हें खाद्यान्न की आवश्यकता है, विद्यालयों की आवश्यकता है, चिकित्सा की आवश्यकता है, परिवहन, वस्त्र आवास की आवश्यकता है।

4. तीव्र आर्थिक विकास हेतु– आज विश्व का प्रत्येक देश आर्थिक विकास के लिए प्रयत्नशील है। निर्धनता, अज्ञानता बीमारी मानव के लिए आज भी गम्भीर समस्या के रूप में विद्यमान है। भारत में ये समस्याएँ भी उग्रता के साथ उपस्थित हैं। इनके समाधान हेतु अनेक अन्य प्रयासों के साथ शिक्षा को भी अपनी भूमिका निभानी है, क्योंकि अब यह मान लिया गया है कि आर्थिक विकास के लिए भौतिक पूँजी ही नहीं वरन् मानवीय पूँजी भी आवश्यक है। शिक्षा को आर्थिक विकास की चुनौती स्वीकार करना होगा इसके लिए नवाचार की आवश्यकता है।

निष्कर्षः नवाचार शैक्षिक व्यवस्था शिक्षण कार्य प्रणाली को मजबूत बनाये रखने के लिए आवश्यक महत्वपूर्ण तकनीकी है। इसके अभाव में शैक्षिक लक्ष्यो प्रक्रिया मे व्यापक अंतर हो सकता है। इनका प्रयोग वतर्मान के साथ ही भविष्य की अपेक्षाओ की भी पूर्ति करने में सहायक है। शिक्षक शिक्षा मे नवाचार द्वारा छात्राध्यापक सामुदायिक सहभागिता, अभिनव शिक्षण, तकनीकी, खेल–खेल में शिक्षा, सरल अंग्रेजी अधिगम, बाल ससंद, कला शिल्प से सर्वांगीण विकास, कॉन्सेप्ट मैपिंग, चित्रकथा के माध्यम से शिक्षा आदि का प्रयोग अपने भावी जीवन मे कर पायेगे। नवाचार से शिक्षण मे गूढ़ात्मक उन्नयन होता है, शिक्षा को दिशाबोध प्राप्त होता है जिससे व्यक्ति, समाज तथा राष्ट्र के प्रगति का मार्ग प्रशस्त होता है। अर्थात् सामाजिक, आर्थिक, राजनैतिक, सांस्कृतिक, वैज्ञानिक शैक्षिक दृष्टिकोण से शिक्षक–शिक्षा में नवाचार की महत्ता स्वीकार की जाती है।

REFERENCES

1. पटेल,माधव (2018), शिक्षा में नवाचारः

2. मिशेल, जे.एम. (2003). इमर्जिंग फ्यूचर्सः इनोवेशन इन टीचिंग एण्ड लर्निंग वी.ई.टी.ए.एन.टी.ए. मेलबार्न।

3. कुमार, डॉ. अमित (2015). भारतीय शिक्षक शिक्षा में अभिनव दृष्टिकोण –2277–1255

4. भाई योगेन्द्रजीत (2014–15) शिक्षा में नवाचार नवीन प्रवृत्तियाँ

5. पटले , माधव (2018). शिक्षा मे नवाचारः

6. सिंह, आर. आर. (2007) नैतिकता के लिए शिक्षा जयपुर : आर. वी. एस. एस पब्लिशर्स, पृष्ठ संख्या–23

7. डा. त्यागी, बी. डी. (2010), प्रसार शिक्षा सामुदायिक विकास रामा पब्लिशिंग हाउस, मेरठ

8. त्रिवेदी, आर. एन. शुक्ला, डी.पी (2008) रिसर्च मैथ्डोलॉजी जयपुरः कॉलेज बुक डिपो पृष्ठ संख्या 321

9. डेंग झेड 2003, स्कूल सब्जेक्ट एन्ड एकेडेमिक डिसिप्लीन, रूट लेज।

10. कुमार कृष्ण, 2004 वॉट इज वर्थ टीचिंग ओरियेंट ब्लैक स्वॉन।

11. यादव, एम. आर. अनुसंधान परिचय, आगराः विनोद पुस्तक मंदिर पृष्ठ संख्या 74

12. अम्बस्ट व रथ, प्रारम्भिक शिक्षा के नवीन प्रयास, प्रथम संस्करण, 2010, आर.एस.ए. इण्टरनेशनल, आगरा।

13. हॉलिस, मार्टिन, 2003 द फिलॉसाफी ऑफ सो लसाइंसेस, केम्ब्रिज युनिवर्सिटी